International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(II), January - March, 2023, pp. 94-96

राजस्थान में पर्यटन विकासः चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ

डॉ. शकुन्तला मीना*

प्रस्तावना

राजस्थान का गौरभमय अतीत, शौर्य, शक्ति और बलिदानों का प्रतीक हैं। राजस्थान अपने अद्‌भूत प्राकृतिक सौन्दर्य–उच्च शिल्पकला से परिपूर्ण मन्दिरों,महलों तथा रंग–बिरंगे त्यौहारो व मेलो के कारण देश–विदेश के पर्यटको को आकर्षित करता है राजस्थान में पर्यटको को "पधारो म्हारे देश" का आकर्षक आमन्त्रण दिया जाता है। इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने राजस्थान भ्रमण के दौरान राजस्थान को अत्यधिक सरमय तथा अत्यन्त मुग्ध कसे वाला प्रदेश माना और अपनी पुस्तक 'टेवल्स इन वेस्टर्न इंडिया' में भी इसका वर्णन किया है। यहाँ प्रमुख शहर जैसे जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, अजमेर, पुष्कर, बीकानेर, भरतपुर, डीग, बूंदी, अलवर, कोटा, चितौड़गढ, माउटआबू, जैसेलमेर आदि अपनी–अपनी ऐतिहासिक परम्पराओं व कलाओं के लिए जाने जाते है। राजस्थान में पर्यटक को दस सर्किट में बॉटा गया हैं यहां पर्यटन की अपार संभावनाऐं है साथ में चुनौतियाँ भी बहुत है। सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन विकास सम्भावनाए,खेलकूद एवं साहसिक कार्य, वन्यजीव पर्यटन का विकास, सभा एवं सम्मेलन पर्यटन विकास की सम्भावनाऐं व साथ मे पर्यटको की सुरक्षा, धोखाधडी, परिवहन एवं संचार सुविधाए, होटलों की व्यवस्था, कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था की चुनौतिया भी है। पर्यटन को दर्शको की भीड़ नहीं असल पर्यटको की दरकार जिनसे हमारी अर्थव्यवस्था को लाभ हो पर्यटन रोजगार परख हो। मुख्य शब्दः– भ्रमण, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक,सुरक्षा व अर्थव्यवस्था राजस्थान का गौरमय अतीत शौर्य, शक्ति और बलिदानों का प्रतीक है। भारत के पर्यटन मानचित्र में राजस्थान का महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य हमेशा से ही पर्यटन प्रेमी रहा है। ज्ञान विज्ञान के प्रचार–प्रसार में घुमकड़ों का बहुत बड़ा योगदान है। राजस्थान पर्यटन विभाग ने देश–विदेश के पर्यटको को **पधारो म्हारे देश** का आकर्षक आमन्त्रण दिया है राज्य में उद्योगो के विकास के साथ पर्यटन की काफी संभावनाऐं है। यहां के प्रमुख शहर जैसे जयपुर, उदयपुर, अजमेर, बीकानेर इत्यादि अपनी अपनी ऐतिहासिक परम्पराओं व कलाओ के लिए जाने जाते है। यह अपने प्राकृतिक सौन्दर्य– उच्च शिल्पकला से परिपूर्ण मन्दिरों, महलों, तथा रंग बिरंगे त्यौहार एवं मेलो के कारण देश–विदेश के पर्यटको के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रहा है। राजस्थान में कुछ भागों में जंगल से ढके प्राकृतिक स्थान एवं जीवों के लिए सुरक्षित स्थान रणथम्भौर, सरिस्का और जयसमन्द, तथा आमेर के किले, झीलों की नगरी उदयपुर, खुबसूरत नियोजित नगर, जयपुर, पर्यटको को अपनी ओर आकृषित करता है भारत में आने वाले हर तीसरा विदेशी पर्यटक राजस्थान जरूर आता है राजस्थान में पर्यटको को इतिहास काफी पुराना है। यहां पर विदशी पर्यटको में सिकन्दर, ,चीनी यात्री हेसांग और फाह्यान, प्रसिद्ध इतिहासकार डा0 ठायनवी प्रसिद्ध इटालियन भाषाशस्त्री टेशीटेरा मेरिया महारानी एलिजाबेथ। जयपुर तो विदेशी पर्यटक निरन्तर आते रहते है। राजस्थान को पर्यटक की दृष्टि से 10 सर्किटो में बांटा गया है।

- ढूढाड़ क्षेत्र (जयपुर आमेर दौसा
- मेरवाडा क्षेत्र (अलवर,भरतपुर,सवाईमाधोपुर)
- बॉगड क्षेत्र (डूँगरपुर, बाँसवाडा)
- हाडौती (कोटा,बूंदी,झालावाड)

* सहायक आचार्य ई.ए.एफ.एम., महारानी श्री जया महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान।

- मारवाड (अजमेर, पुष्कर, मेड़ता नागौर)
- शेखावटी क्षेत्र (सीकर, झुनझुनू, चूरू)
- मरू सर्किट (बीकानेर, जैसलमेर, बाडमेर, जोधपुर)
- माउण्ट आबू (रणकपुर, जालौर)
- मेवाड क्षेत्र (उदयपुर, कुम्भलगढ, नाथद्वारा, चितौडगढ़, जयसमन्द डूगरपुर)
- रणथमभौर क्षेत्र (रणथम्भौर,सवाईमाधोपुर,टोक)

इन सभी सर्किटो के अपने–अपने आकर्षक है। जिनका पर्यटक भरपूर आन्नद लेते है। चार धार्मिक सर्किट भी पुष्कर,अजमेर, बृज भूमि, मेवाड़, महावीर जी, स्वर्णिम त्रिभुज (जयपुर, दिल्ली, आगरा) के कारण ही पर्यटक राजस्थान आते है।

राजस्थान में पर्यटन की सम्भावनाऐं

- सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन विकास की संभावनाएः राजस्थान ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहर से सम्पन्न है। प्राचीन स्मारक, किले हवेलियाँ, महल, इमारते, लोकनृत्य, संगीत, हस्तकला, दस्तकला, मन्दिर, दरगाह, पर्यटको को आकर्षित कर रहे है राज्य में पर्यटको के सम्बन्ध में महेमानो को पर्याप्त स्वागत आत्मयिता और स्नेह दिया जाय तो पर्यटन विकास निश्चित होगा।
- खेल–कूद एवं साहसिक कार्य को विकास मरू क्षेत्र में ऊटों की सवारी एवं दौड़, जल क्रीडा, नौका विहार प्रतियोगिता, खेल–कूद पहाड़ी भागों मे पर्वतारोहण, मछली पकडने की प्रतियोगिता पर्यटन को काफी आकर्षित कर रही है।
- राजस्थान में विविध प्रकार के वन्य जीवों, पुशु–पक्षियों, भरतपुर(घना पक्षी विहार) अलवर एवं सवाईमाधोपुर पर्यटक की भरमार है। भविष्य में कोटा, च्त्तौडगड एवं उदयपुर जोधपुर में मरू वन्य जीव राष्ट्रीय पार्क की स्थापना से भी पर्यटन की सम्भावनाऐं बढ़ी हैं।
- राजस्थान के ऐतिहासिक एवं रमणीक स्थलों पर राष्ट्रीय एवं अनतर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन सेमीनार गोष्टियां आयोजित करने के लिए सभागार व आवश्यक सुविधाऐं उपलब्ध कराई जाएगी तो पर्यटन की तेजी से बढेगा अगर उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, कोटा, बूंदी, माउन्ट–आबू आदि में सम्मेलन कराये जाए तो पर्यटन को निश्चित ही गति मिलेगी राजस्थान में पर्यटन को उद्योग का दर्जा दे दिया गया है। इससे विदेशी मुद्रा का अर्जन बढेगा रोजगार में वृद्धि होगी। कम पूंजी विनियोग पर अधिक लाभ, परिरवहन व संचार के साधनों का विकास होगा, स्थानीय लोगों की आय बढ़गी व रोजगार मिलेगा, व्यापार व उद्योगों का विकास सम्भव होगा, अन्तराष्ट्रिय व्यापार में वृद्धि होगी, पर्यटन बिना प्रदुषण आय व रोजगार प्रदान करने वाला उद्योग है। पर्यटन सम्भावनाए अधिक बढ़ाने से राजस्थान आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से सम्पन्न व मजबूत होगा। राजस्थान में 1971 में पर्यटकों की संख्या 9.62 लाख थी जो 2015 में बढ़कर 366.62 लाख हो गई है। राजस्थान में पर्यटन इकाई नीति 2007, पर्यटन इकाई नीति 2015 की घोषणा की गई अतः राजस्थान में पर्यटन की भरपूर सम्भावनाएँ हैं।

लेकिन इसके लिए कुछ **चुनौतिया** भी हैं।

पर्याप्त साहित्य की अपर्याप्ता, पर्यटन स्थलों पर गाइड व जनसम्पर्क की समस्या, पर्यटन स्थलों की स्वच्छता व रख रखाव, आवास परिवहन व संचार की सुविधाओं का अभाव, पर्यटकों का आकर्षित करने के लिए मेलों उत्सवों के आयोजनों की कमी, पर्यटकों की सुरक्षा व उन्हें धोखाधड़ी से बचाना, स्वास्थ्यप्रद पर्यटक स्थलों की समस्या, सदभावना व संवेदनशीलता की समस्या, पर्यटको से अभद्र व्यवहार, केन्द्र व राज्यों के बीच पर्यटक स्थलों को लेकर ठकराव, नये होटलो का निर्माण, पर्याप्त कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था, पर्यावरण प्रदुषण व संरक्षण चुनौतिया। पर्यटको के लिए डिजिटल भुगतान की समस्या ये सभी चुनौतियां पर्यटक विकास बाधक है।

सुझाव

पर्यटन की राजस्थान में अपार सम्भावनाए है। सभी चुनौतियों का समाधान किया जाएऔर इनमे सुधार किया जाए, पर्यटन में निजी सहभागिता को बढ़ाया दिया जाये, पेइंग गेस्ट योजना को बढ़ावा मिले, विमान सेवा का विस्तार, प्रदुषण नियन्त्रण के लिए कारगर कदम, हेरिटेज होटलों की संख्या में वृद्धि, ग्रामीण पर्यटन, ट्रेन पर्यटन, पर्यटको के लिए डिजिटल भुगतान व ए.टी.एम की व्यवस्था, पर्यटको स्थलो के टिकिटो की राशि मे अन्त में शून्य रखा जाए जिससे खुल्ले पैसों की समस्या समाप्त हो। उदाहरण के लिए भरतपुर घना पक्षी विहार मे हजारो की संख्या में पर्यटक आते है। वहा ना ए.टी.एम. न ही डिजिटल पेमेन्ट, ऊपर से टिकीट राशि देशी पर्यटक –126 रूपये, विदेशी पर्यटक –761 रूपये व विद्यार्थी –46, जिससे चिल्लर की समस्या बनी रहती है। परिवहन व्यवस्था सुचारू होना, आज जो मेले उत्सव पर्यटन और पर्यटको बढ़ रहे है उनके लिए अक्सर न ही बजट होता है और न समय से तैयारी न प्रचार प्रसार रिक्त स्थान भरना ही यदि मकसद है तो इसके लिए सोचना जरूरी है। आधी–अधूरी तैयारी के साथ कुछ नया करना पर्यटको को लुभाने पर प्रतिकूल असर डालने लगे है। पर्यटन न हो या न के बराबर हो तो यह पर्यटन उद्योग से जुड़े हितधारको के लिए विचार के लिए कई सवाल छोड़ता है।

निष्कर्ष

राजस्थान में पर्यटन की अपार सम्ससवनाऐं है आवश्यकता हैं तो पर्यटको को आकर्षित करने की पर्यटन बिना प्रदूषण वाला व रोजगार परख उद्योग है। आय में वृद्धि पर्यटन में लोगों की रूचि को बढाऐगी निश्चित आय भी पर्यटको की संख्या बढ़ाती है। पर्यटको के आवगमन से प्रदेश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी प्रदेश खुशहाल व समृद्ध होगा तीव्र गति से प्रगति की ओर अग्रसर होगा क्योंकि पर्यटन को दर्शको की भीड़ नही, असल पर्यटको की दरकार होती है।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजस्थान में आर्थिक पर्यावरणः बी.एल.ओझा, मनोज कुमार ओझा (2016–17) अजमेर बुक कम्पनी, जयपुर पृष्ठ संख्या 25.1 से 25.22
2. राजस्थान में आर्थिक पर्यावरणः– डॉ0.बी.पी. गुप्ता (2016–17) बी.डी. पब्लिशिंग हाउस रमेश बुक डिपो, जयपुर (2016–17) पृष्ठ संख्या 18.1 से 18.22
3. पर्यटन प्रबन्ध एवं मानव संसाधन विकास डॉ0 विमल कुमार कपूर (2008) रजत प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. सांस्कृतिक पर्यटन राजस्थानः– राजेश कुमार व्यास (2011) हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
5. प्रगति प्रतिवेदन (2015–2016) पर्यटन विभाग राजस्थान।
6. पर्यटन नीति पर्यटन कला संस्कृति विभाग जयपुर (2012–13,2014–15)
7. भारत में पर्यटन उद्योग की नवीन प्रवृत्तियाँ एवं आर्थिक विकासः जगन्नाथ रजक (2011)अध्ययन पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
8. राजस्थान पत्रिका माह दिसम्बर
9. राजस्थान का इतिहासः डॉ0 गोपीनाथ शर्मा, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी पुस्तक प्रकाशक, आगरा।
10. राजस्थान में पर्यटन, उद्भव, विकास एवं वर्तमान स्थितिः– डॉ. मोहनलाल गुप्ता (2017), शुभदा प्रकाशन, जोधपुर।

❖◆❖